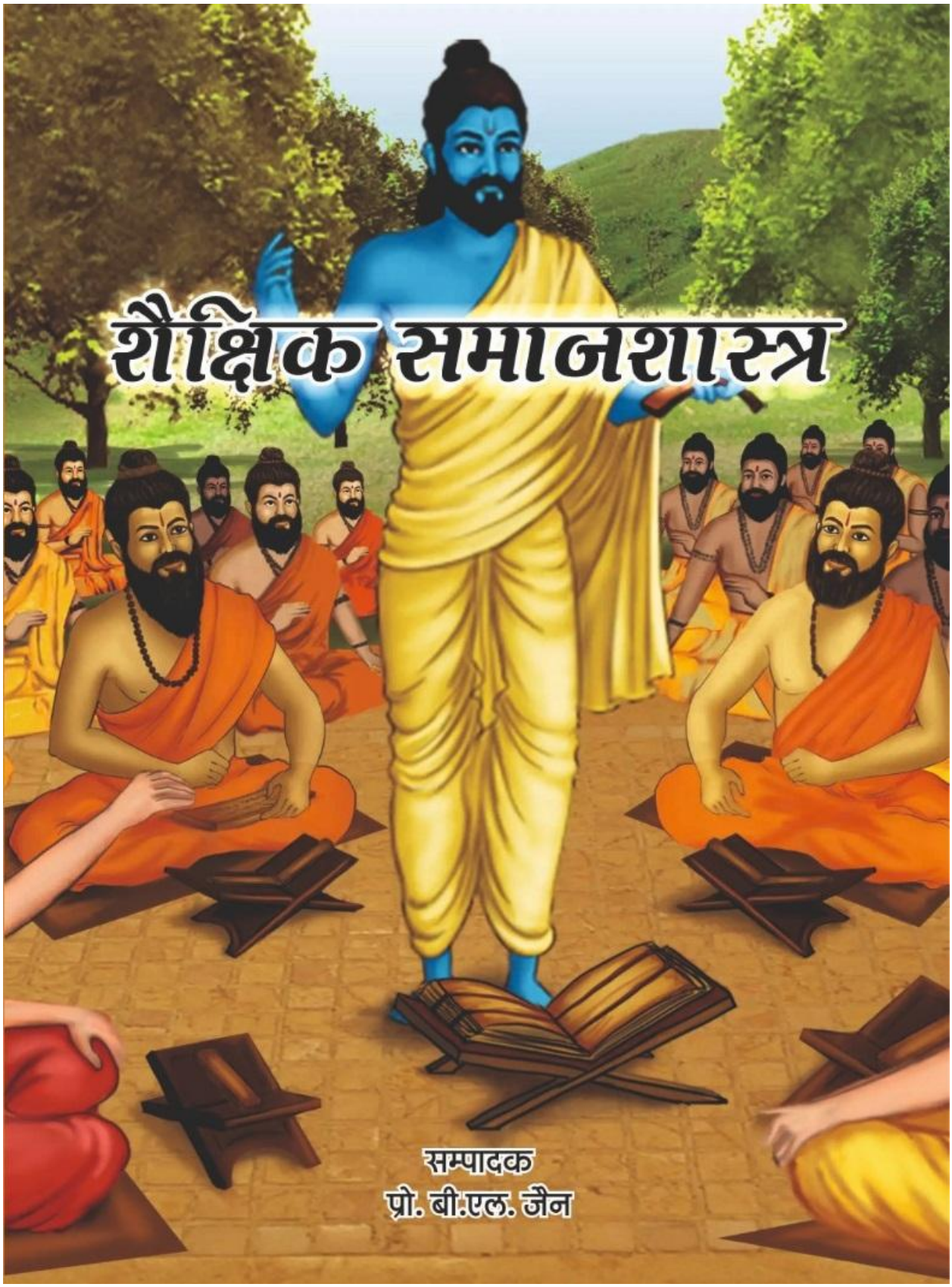

शैक्षिक समाजशास्त्र

सम्पादक
प्रो. बी.एल. जैन

अनुक्रमणिका

1.	शैक्षिक समाजशास्त्र का अर्थ -प्रो. बी. एल. जैन	1-21
2.	भारत में परिवार और शिक्षा -डॉ. भाबाग्राही प्रधान	22-26
3.	शिक्षा-एक सामाजिक उप-व्यवस्था के रूप में -डॉ. आभा सिंह	27-38
4.	धर्म और शिक्षा -डॉ. अमिता जैन	39-53
5.	सामाजिक गतिशीलता -डॉ. अमिता जैन	54-65
6.	संस्कृति और शिक्षा -डॉ. गिरधारी लाल शर्मा	66-83
7.	समाजीकरण -डॉ. गिरधारी लाल शर्मा	84-98
8.	सामाजिक परिवर्तन एवं शिक्षा -डॉ. सरोज राय	99-118
9.	शिक्षा और लोकतंत्र -डॉ. अदिति गौतम	119-138
10.	आधुनिकीकरण एवं शिक्षा -डॉ. गिरिराज भोजक	139-150
11.	सामाजिक स्तरण या स्तरीकरण -प्रो. बी. एल. जैन	151-171
12.	शिक्षा और राजनीति -डॉ. मनीष भटनागर	172-189
13.	शैक्षिक अवसरों की समानता -डॉ. मनीष भटनागर	190-218
14.	शिक्षा और समुदाय -डॉ. अदिति गौतम	219-236

समाजीकरण
(Socializattion)

डॉ. गिरधारी लाल शर्मा

In short the whole process of socialization falls within the scope of interaction or the social act - Kimball Young

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जब बच्चा जन्म लेता है, तब वह रक्त, माँस, हड्डी आदि का एक जीवित पुतला मात्र होता है। उस समय उसमें न तो कोई सामाजिक गुण होता है और न ही समाज विरोधी गुण। उस समय तो वह थोड़े से प्राणी शास्त्रीय गुणों वाला एक जीवित प्राणी होता है। समाज तथा संस्कृति के बीच पलता हुआ बच्चा धीरे-धीरे एक सामाजिक प्राणी में बदल जाता है अर्थात उस प्राणीशास्त्रीय या जैविक प्राणी में सामाजिक गुण या लक्षण प्रकट होने लगते हैं। वह अपनी सामाजिक परम्पराओं तथा रूढ़ियों के अनुसार व्यवहार करना सीख जाता है और इसके द्वारा अपने को पशु जगत से पृथक कर लेता है। इस प्रकार जिस क्रिया के द्वारा कोई भी जैविक प्राणी सामाजिक प्राणी में बदल जाता है, उसे समाजीकरण (Socialization) कहते हैं।

सामाजीकरण से ही व्यक्ति मनुष्य बनता है और अपनी सामाजिक सांस्कृतिक विरासत का सक्रिय भागीदार बनता है और अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। संक्षेप में, समाजीकरण व्यक्ति को सामाजिक जीवन के ढ़ंग को सिखाने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।

समाजीकरण का अर्थ एवं परिभाषा :

समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक प्राणी बनता है। इसमें अनेक उपप्रक्रियाऐं सम्मलित होती है जो जन्म से मृत्युपर्यन्त निरन्तर चलती रहती हैं और मनुष्य को सामाजिक बनाने में योग देती हैं। समाजीकरण का अर्थ उस प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अन्तः क्रिया करता हुआ सामाजिक आदतों, विश्वासों, रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं एवं अभिवृत्तियों को सीखता है। इस प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति जनकल्याण की भावना से प्रेरित होते हुए अपने आपको अपने परिवार, पड़ौस तथा अन्य सामाजिक वर्गों के अनुकूल बनाने का प्रयास करता है, जिससे वह समाज का एक श्रेष्ठ, उपयोगी एवं उत्तरदायी सदस्य बन जाए तथा उक्त सभी सामाजिक संस्थाएं एवं वर्ग उसकी प्रशंसा करते रहें।

सारांशतः हम यह कह सकते है कि ''समाज में रहकर व्यक्ति कुछ आदतों, विश्वासों, मान्यताओं, परम्पराओं, आदर्शों, संस्कारों आदि को सीखता है। सीखने की इस प्रक्रिया को समाजीकरण कहते है।

समाजीकरण के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषाएं दी जा रही है, जो निम्नलिखित है-

1. रॉस (Ross) – समाजीकरण सहयोग करने वाले व्यक्तियों में 'हम भावना' का विकास करता है और उनमें एक साथ कार्य करने की इच्छा तथा क्षमता में वृद्धि करता है।
2. सोरोकिन (Sorokin) – ''समाजीकरण, सांस्कृतिक तथा वैचारिक कारकों के अन्तरीकरण की प्रक्रिया है।''
3. ड्रेवर (Drever) – ''समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण से समायोजन करता है और सामाजिक मान्यता प्राप्त करके वह समाज

का मान्य, सहयोगी एवं कुशल सदस्य बनता है।''

4. गिलिन एवं गिलिन (Gillin and Gillin) – ''समाजीकरण से हमारा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा व्यक्ति, समूह का एक क्रियात्मक सदस्य बनता है, तथा उसी के स्तर के अनुसार कार्य करता है। उसके लोकाचार, परम्परा तथा सामाजिक परिस्थितियों के साथ अपना समन्वय स्थापित करता है।

5. वाटसन (Watson) –''समाजीकरण एक सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रकिया है।''

6. हैविघर्स्ट एवं न्यूगार्टन (Havighurst and Newgartion) – ''सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक अपने समाज के स्वीकृत ढंगों को सीखते हैं और इन ढंगों को अपने व्यक्तित्व का अंग बना लेते हैं।''

समाजीकरण के उपर्युक्त विवरण के आधार पर समाजीकरण की निम्नलिखित विशेषताऐं होती है–

1. समाजीकरण, सीखने की एक प्रक्रिया है।
2. यह सीखना, सांस्कृतिक विशेषताओं और सामाजिक मूल्यों का होता है।
3. इस प्रक्रिया के द्वारा ही सांस्कृतिक विशेषताऐं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है।
4. समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति के 'आत्म' (Selfhood) को विकसित करती है क्योंकि इसी के द्वारा व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया (Prosess of Socialization) :

समाजीकरण की प्रक्रिया बच्चे के जन्म से कुछ दिन बाद से ही प्रारम्भ हो जाती है तथा वृद्धावस्था तक अर्थात जीवन पर्यन्त चलती

रहती है। इस प्रक्रिया के द्वारा ही बालक को सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के विभिन्न कारक है, जिनमें से कुछ प्रमुख कारक निम्नलिखित है-

1. पालन-पोषण (Child Rearing) : बालक के समाजीकरण में पालन-पोषण का गहरा प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार से माता पिता बालक का पालन-पोषण करते हैं, उसी के अनुसार बालक में भावनाएं एवं अनुभूतियां विकसित हा` जाती हैं और यह देखा भी गया है कि जिस बालक की देख रेख उचित ढंग से नहीं होती, उसमें समाज विरोधी आचरण विकसित हो जाते हैं।
2. अनुकरण (Imitation) : परिवार के सदस्य के रूप में बालक परिवार के अन्य सदस्यों से अन्तःक्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है और उनके व्यवहारों का अनुकरण करने लगता है। अनुकरण समाजीकरण की प्रक्रिया का आधारभूत तत्व है। बालक अनुकरण के आधार पर दूसरों के व्यवहार को सरलता से सीख लेता है। इतना ही नहीं वरन् वह अनुकरण करते हुए जाने-अनजाने परिवार के अन्य सदस्यों की भूमिकाओं (Roles) को करने लगता है।
3. सहानुभूति (Sympathy) : सहानुभूति का भी बालक के समाजीकरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसका कारण यह है कि सहानुभूति के द्वारा बालक में अपनत्व की भावना विकसित होती है, जिसके परिणामस्वरूप वह एक दूसरें में भेद-भाव करना सीख जाता है। वह उस व्यक्ति को अधिक प्यार करने लगता है जिसका व्यवहार उसके प्रति सहानुभूतिपूर्वक होता है।
4. आत्मीकरण (Indentification) : माता-पिता, परिवार तथा पड़ौस की सहानुभूति द्वारा बालक में आत्मीकरण की

भावना का विकास होता है जो लोग बालक के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते हैं, उन्ही को बालक अपना समझने लगता है तथा उन्हीं के रहन-सहन, भाषा तथा आदतों के अनुसार व्यवहार करने लगता है।

5. सहकारिता (Co-operation) : व्यक्ति को समाजिक समाज बनाता है अर्थात् समाज की सहकारिता, बालक को सामाजिक बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जैसे-जैसे बालक अपने साथ अन्य व्यक्तियों का सहयोग पाता जाता है। वैसे वैसे वह दूसरें लोगों के साथ अपना सहयोग भी प्रदान करना प्रारम्भ कर देता है। इससे उसकी सामाजिक प्रवृत्तियां संगठित हो जाती है।

6. निर्देश (Suggestions) : बालक के समाजीकरण में सामाजिक निर्देशों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक प्रायः उसी कार्य को करता है, जिसको करने के लिए उसे निर्देश दिया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि निर्देश सामाजिक व्यवहार की दिशा को निर्धारित करते हैं।

7. सामाजिक शिक्षण (Social Teaching) : सामाजिक शिक्षण, बालक के समाजीकरण पर गहरा प्रभाव डालता है। ध्यातव्य है कि सामाजिक शिक्षण का आरम्भ परिवार से होता है जहां पर बालक माता-पिता, भाई-बहन तथा अन्य सदस्यों से खान-पान तथा रहन-सहन आदि के बारे में शिक्षा ग्रहण करता रहता है।

8. पुरस्कार एवं दण्ड (Reward and Punishment) : जब बालक समाज के आदर्शों तथा मान्यताओं के अनुसार व्यवहार करता है तो लोग उसकी प्रशंसा करते है। साथ ही वह समाज के हित को दृष्टि में रखते हुए जब कोई विशिष्ट व्यवहार करता है, तो उसे पुरस्कार भी मिलता है। इसके

विपरीत जब बालक असामाजिक व्यवहार करता है तो उसे दण्ड दिया जाता है, जिसके भय से फिर वह ऐसा कार्य दोबारा नहीं करता। स्पष्ट है पुरस्कार एवं दण्ड का बालक के समाजीकरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव है।

बालक का समाजीकरण करने वाले तत्व

(Factors Leading to the Socialization of the Child) :

समाजीकरण की प्रक्रिया एक जटिल प्रकिया है जिसमें अनेक साधनों या तत्वों का योगदान होता है। वस्तुतः समाजीकरण एक सामाजिक सांस्कृतिक प्रक्रिया है। इस कारण उसकी सफलता या विफलता किसी एक तत्व या कारक या साधन पर निर्भर नहीं होती, वरन एकाधिक साधनों पर होती है। बालक के समाजीकरण करने वाले कुछ महत्वपूर्ण तत्व निम्नलिखित है –

1. परिवार (Family) : किम्बल यंग के अनुसार "समाज के अन्दर समाजीकरण के विभिन्न साधनों में 'परिवार' सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।"

   प्रत्येक बालक का जन्म किसी न किसी परिवार में होता है जैसे-जैसे बालक बड़ा होता जाता है वैसे-वैसे वह अपने माता पिता, भाई-बहनों तथा परिवार के अन्य सदस्यों के सम्पर्क में आते हुए प्रेम, सहानुभूति, सहनशीलता तथा सहयोग आदि अनेक सामाजिक गुणों को सीखता रहता है। साथ ही वह परिवार के आदर्शों, मूल्यों, रीति-रिवाजों, परम्पराओं, मान्यताओं और विश्वासों को भी धीरे-धीरे बालक सीखता है। इस प्रकार परिवार के सदस्यों के साथ अन्तःक्रिया द्वारा बालक का समाजीकरण होता रहता है।

2. समान आयु समूह (Peer Group) : जब बालक थोड़ा बडा होकर घर से बाहर कदम रखता है, तब उसका सम्पर्क अन्य बच्चों से होता है। ये बच्चे विभिन्न परिवारों के होते

है। इन बच्चों के साथ उठने बैठने तथा खेलने से वह अनुकूलन की कला, मिलकर काम करने की आदत तथा सामाजिक सम्बन्धों को भी सीखता है। इस प्रकार यह आयु समूह समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

3. पड़ौस (Neighbourhood) : पड़ौस भी एक प्रकार का बड़ा परिवार होता है। परिवार की भांति बालक पड़ौस में रहने वाले विभिन्न सदस्यों एवं बालकों के सम्पर्क में रहते हुए विभिन्न सामाजिक बातें सीखता रहता है। इस दृष्टि से यदि पड़ौस अच्छा है, तो उसका बालक के व्यक्तित्व पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा और यदि पड़ौस सही नहीं है तो बालक पर विपरीत प्रभाव भी पड़ सकता है। यही करण है कि अच्छे परिवारों के लोग अच्छे ही पड़ौस में रहना पसन्द करते हैं।

4. नातेदारी समूह (Kinship Groups) : नातेदारी समूह भी समाजीकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बालक अपने नाते-रिश्तेदारों से विभिन्न कार्यों एवं व्यवहारों को सीखता है।

5. विद्यालय (School) : परिवार के वाद बच्चे के समाजीकरण का सबसे महत्वपूर्ण साधन विद्यालय है। विद्यालय में जहां एक ओर उसे सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्शों और मान्यताओं की षिक्षा प्राप्त होती है, वहीं दूसरी ओर उसे मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक विकास के लिए प्रेरणा मिलती है। विद्यालय में बालक विभिन्न विषयों की प्रत्यक्ष शिक्षा द्वारा सामाजिक नियमों, रीति-रिवाजों, परम्पराओं, विश्वासों एवं मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करता है। इसके साथ ही विद्यालय की विभिन्न सामाजिक योजनाओं

में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न सामाजिक गुणों का विकास भी करता है। विद्यालय का वातावरण, अनुशासन, परीक्षाफल, पाठ्यकम, छात्रों की संख्या, शिक्षक और उनकी योग्यता आदि सभी बालक के समाजीकरण पर प्रभाव डालते है।

6. खेल-कूद (Games and Sports) : बच्चे सबसे ज्यादा खेल-कूद को पर पसन्द करते हैं। खेलते समय वे जाति-पांति, ऊंच-नीच तथा अन्य प्रकार के भेद भावों से ऊपर उठकर दूसरें बालकों से साथ अन्तःप्रक्रिया द्वारा आनन्द लेते हैं। इस प्रकार खेल में सामाजिक अन्तःप्रकिया का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन होता है। खेलते ही खेलते बालक मे प्रेम, सहानुभूति, सहनशीलता, सहयोग आदि अनेक गुण अनजाने ही सहज में विकसित हो जाते हैं। इस प्रकार खेल-कूद के द्वारा बालक के समाजीकरण में अत्यधिक सहायता मिलती है।

7. स्काउटिंग एवं गर्ल गाइडिंग (Scouting and Girl Guiding) : ये संगठन बालक-बालिकाओं को जनकल्याण के लिए सामूहिक कार्यों को करने के लिए अवसर प्रदान करते हैं, जिससे उनमें परस्पर सहयोग, त्याग, निःस्वार्थ भाव से सेवा करने की भावनाओं का विकास होता है।

8. जाति (Caste) : प्रत्येक जाति की सांस्कृतिक उपलब्धियां, परम्पराएं, रीति-रिवाज तथा प्रथाएं अलग-अलग होती हैं। यही कारण है कि प्रत्येक जाति के बालक का समाजीकरण भिन्न-भिन्न होता है।

9. समुदाय अथवा समाज (Community or Society) : प्रत्येक समुदाय अथवा समाज अपने-अपने विभिन्न साधनों अथवा विधियों द्वारा बालक का समाजीकरण करता है। वे साधन है - जातीय तथा राष्ट्रीय प्रथाएं एवं परम्पराएं, मनोरंजन,

राजनीतिक विचारधाराएं, धार्मिकता, संस्कृति, कला, साहित्य, इतिहास, वर्ग और वर्ण, सामाजिक परम्पराएं और प्रथाएं, शिक्षा के साधन तथा अन्य सुविधाएं।

10. धर्म (Religion) : बालक के समाजीकरण में धर्म का भी महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक धर्म के कुछ संस्कार, परम्पराएं, आदर्श तथा मूल्य होते हैं। जैसे-जैसे बालक अपने धर्म तथा अन्य धर्म के व्यक्तियों एवं समूहों के सम्पर्क में आता है वैसे-वैसे वह धर्म की बातों को सीखता जाता है।

11. भाषा (Language) : समाजीकरण की प्रक्रिया का एक और महत्वपूर्ण साधन भाषा है। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपने विचार, संस्कृति, आदर्श, मूल्य, ज्ञान एवं विज्ञान को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी हो हस्तांतरित करता है। भाषा के कारण की व्यक्ति वास्तविक अर्थ में मानव बन पाता है।

12. राजनैतिक संस्थाएं (Political Agencies) : राजनैतिक संस्थाओं का बालक के समाजीकरण में महत्वपूर्ण योगदान है। उदाहरणार्थ- तानाशाही सरकार में व्यक्ति के जीवन में सुरक्षा की भावना कम होती है, फलस्वरूप उसके व्यक्तित्व के स्वाभाविक विकास में बाधाएं उत्पन्न होती है। कल्याणकारी राज्य का प्रभाव व्यक्ति के सामाजीकरण पर इसके विपरीत पड़ता है।

समाजीकरण में बाधक तत्व (FactorsResisting Socialization) :

मैसलों तथा मिटिलमैन के अनुसार समाजीकरण में बाधक तत्व निम्नलिखित है-

1. बाल्यकालीन परिस्थितियां (Childhood Situations) : बाल्यकाल में यदि बालक को माता-पिता के प्रेम का अभाव, उनके द्वारा बच्चे की अस्वीकृति, माता-पिता में

झगड़ा रहना, विधवा माँ, पक्षपात, असुरक्षा की भावना, एकाकीपन, दुखपूर्ण अनुभव, अन्यायपूर्ण दण्ड आदि परिस्थितियां सहनी पड़ती हैं, तो बालक के समाजीकरण में बाधा पहुँचती है।

2. सांस्कृतिक परिस्थितियां (Cultural Situations) : सांस्कृतिक परिस्थितियों के अन्तर्गत, जाति, वर्ग, धर्म आदि से सम्बन्ध रखने वाली पूर्व धारणाएं आदि सम्मिलित हैं।

3. तत्कालीन परिस्थितियां (Immediate Situations) : इनमें निराशा, अपमान, कठोरता, ईर्ष्या, अन्याय, अनियमितता, परिहास आदि सम्मलित है।

4. अन्य परिस्थितियां (Other Situations) : इनमें प्रमुख है- स्कूली शिक्षा का अभाव, आत्म निर्भरता की कमी, शारीरिक हीनता, आत्म विश्वास का अभाव, निरन्तर दूसरों से तुलना, असफलताएं, निर्धनता, पाप की भावना आदि।

समाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षक का कार्य

(Role of Teacher in the process of Socialization) :

बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार के बाद विद्यालय का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है तथा विद्यालय में बालक के समाजीकरण का सबसे बड़ा दायित्व शिक्षक पर होता है। अतः समाजीकरण की प्रक्रिया को ठीक गति प्रदान करने के लिए शिक्षक को निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए :

1. शिक्षक अभिभावक सहयोग (Parent Teacher Co-operation) : शिक्षक का प्रथम कार्य यह है कि वह बालक के माता-पिता से सम्पर्क स्थापित करके उसकी रूचियों तथा मनोवृत्तियों के विषय में ज्ञान प्राप्त करे तथा उन्हीं के अनुसार उसे विकसित होने के अवसर प्रदान करे।

2. संस्कृति का हस्तांतरण (Transmission of Culture) : शिक्षक का कर्त्तव्य है कि बालक को भारतीय संस्कृति के अनुरूप रीति-रिवाज, परम्पराएं, मान्यताएं एवं दृष्टिकोंण आदि का ज्ञान प्रदान करे, जिससे उसका उचित समाजीकरण हो सके।

3. सामाजिक आदर्श (Social Ideals) : बालक शिक्षक के व्यवहार तथा क्रियाओं का अनुकरण करते हैं। अतः शिक्षक का यह दायित्त्व है कि वह कक्षा कक्ष, खेल के मैदान, सांस्कृतिक व साहित्यक क्रियाओं में बालक के समक्ष सामाजिक आदर्शों को प्रस्तुत करे, जिससे उनका समाजीकरण हो सके।

4. विद्यालय की परम्पराएं (Traditions of School) : विद्यालय की परम्पराओं का बालक के समाजीकरण में महत्वपूर्ण स्थान है। अतः शिक्षक का दायित्त्व है कि वह बालक का विद्यालय की परम्पराओं में विश्वास उत्पन्न करे तथा उसे उन्ही के अनुसार कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करे।

5. सामूहिक कार्य को प्रोत्साहन (Encouragement ot Group Work) : शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यालय में विभिन्न सामाजिक क्रियाओं के द्वारा बालकों में सामूहिक क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने के अवसर प्रदान करे। इन क्रियाओं में भाग लेने से उसका समाजीकरण स्वतः ही हो जाएगा।

6. स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना (Feeling of Healthy Competition) : बालक के समाजीकरण में प्रतियोगिता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसका विकास बालकों में शिक्षक के मार्गदर्शन में ही संभव है। अतः शिक्षक को बालक में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना विकसित करनी

चाहिए।

7. अन्तर सांस्कृतिक भावना का विकास (Development of Inter Cultural Feeling) : विद्यालय में विभिन्न परिवारों से आने वाले बालकों की संस्कृतियां भी भिन्न-भिन्न होती है। शिक्षक को चाहिए कि वह बालकों में अन्तर-सांस्कृतिक भावना का विकास करे ताकि बालक केवल अपनी संस्कृति का ही आदर न करे वल्कि वह दूसरी संस्कृतियों के प्रति भी अच्छी भावना रख सकें।

8. स्वस्थ मानवीय सम्बन्ध (Healthy Human Relations) : शिक्षक को चाहिए कि वह दूसरें बालकों, शिक्षकों एवं विद्यालय के प्रधानाचार्य के साथ स्वस्थ मानवीय सम्बन्ध स्थापित करें। इससे विद्यालय का वातावरण सामाजिक बनेगा तथा इस प्रकार के स्वस्थ सामाजिक वातावरण में बालक का समाजीकरण होना अवश्यम्भावी है।

इस प्रकार शिक्षक माता-पिता की तरह बालक के चरित्र और व्यक्तित्व का विकास करने में महत्वपूर्ण कार्य करता है अर्थात् शिक्षक बालक के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। F.W. Hart ने शिक्षक तथा बालक के सम्बन्ध में परीक्षण किये हैं। उनके अनुसार- ''यदि शिक्षक मित्रता और सहयोग में विश्वास करता है तो बच्चों में भी इस गुणों का विकास होता है। यदि शिक्षक तनिक-तनिक सी बातों पर बच्चों को दण्ड देता है तो उनके समाजीकरण में संकीर्णता आ जाती है। यदि शिक्षक अपने छात्रों के प्रति सहानुभूति रखता है तो छात्रों का समाजीकरण सामान्यरूप में होता रहता है।''

समाजीकरण के सिद्धान्त (Theories of Socialization)

विभिन्न समाजशास्त्रियों ने समाजीकरण की प्रक्रिया के सम्बन्ध में विभिन्न विचार व्यक्ति किए है, जिनमें से प्रमुख मत या सिद्धान्त इस प्रकार है-

1. दुर्खीम का सिद्धान्त (Theory of Durkheim) : दुर्खीम ने समाजीकरण सम्बन्धी अपने विचार अपनी कृति "Sociology and Consciousness" में प्रकट किये हैं। आपने समाजीकरण सम्बन्धी अपने विचारों में "सामूहिक प्रतिनिधित्व" (Collective Representation) तथा "सामूहिक चेतना" (Collective Consciousness) के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

दुर्खीम के अनुसार प्रत्येक समाज में कुछ विचार, धारणाएं एवं भावनाएं होती है, जिन्हे समाज के अधिकांश व्यक्ति स्वीकार करते है। प्रारम्भ में इनका सम्बन्ध व्यक्तित्व चेतना से होता है, किन्तु सभी लोगों की पारस्परिक अन्तःक्रिया के कारण सामूहिक चेतना का निर्माण होता है जो 'सामूहिक प्रतिनिधित्वों' को जन्म देती हैं। सामाजिक परम्पराएं, धर्म, रीति-रिवाजों, प्रथाएं, मूल्य एवं आदर्श सामूहिक प्रतिनिधित्व के उदाहरण हैं। इस सामूहिक प्रतिनिधित्वों का व्यक्ति के समाजीकरण में बड़ा महत्व होता है। समूह के सभी लोग इनका पालन करते हैं, मानते हैं एवं उनके अनुसार आचरण करते हैं। इनकी अवहेलना करने पर सामूहिक प्रतिक्रिया होती है, दण्ड की व्यवस्था की जाती है। बच्चे भी समाजीकरण की प्रक्रिया मे इसी दवाब के कारण इन्हें सीखते हैं, आत्मसात करते हैं जो बाद में उनके व्यक्तित्व के गुण बन जाते है। इससे उनका सामाजीकरण होता है।

2. कूले का सिद्धान्त (Theory of Cooley) : अमरीकन समाजशास्त्री कूले ने अपनी पुस्तक Human Nature and the Social Order में अपने समाजीकरण सम्बन्धी सिद्धान्त को प्रस्तुत किया है, जिसे 'आत्म दर्पण दर्शन सिद्धान्त' (Looking Glass Self theory) के नाम से भी जाना जाता है।

कूले के अनुसार समाजीकरण अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तःक्रिया का परिणाम है। उनका मत है कि समाज के सम्पर्क में आने पर ही व्यक्ति के 'आत्म' (Self) का विकास होता है। समाज व्यक्ति के लिए

दर्पण का कार्य करता है, वह उसमें अपनी छवि देखता है, और समाज के लोग उसके बारे में क्या कहते है, इसी आधार पर वह अपने बारे में अपनी धारणा बनाता है। इसी धारणा के आधार पर उसमें हीनता या श्रेष्ठता के भाव पैदा होते हैं। उदाहरण के लिए- जब परिवार के लोग, मित्र या अन्य लोग कहते हैं कि वह बुद्धिमान है, लम्बा है, शक्तिशाली है, आकर्षक या गन्दा, मूर्ख, कमजोर, या ठिंगना, लड़ाकू, क्रोधी, है तो व्यक्ति भी अपने बारे में वैसा ही सोचने लगता है। इस प्रकार अपने बारे में दूसरों की प्रतिक्रिया से ही व्यक्ति के 'स्व' का निर्माण होता है और उसका समाजीकरण होता है। इसीलिए ही कूले इसे 'आत्म दर्पण दर्शन' कहते है।

3. मीड़ का सिद्धान्त (Theory of Mead) : मीड़ ने समाजीकरण सम्बन्धी अपने विचार Mind, Self and Society नामक पुस्तक में प्रकट किये हैं।

मीड़ के अनुसार समाजीकरण की प्रक्रिया में अपने सम्बन्ध में 'स्व चेतना' (आत्मा चेतना) अधिक महत्वपूर्ण है। व्यक्ति में आत्म चेतना का विकास किस प्रकार होता है, इसे स्पष्ट करने के लिए मीड़ ने 'मैं' (I) तथा मुझे (Me) शब्दों का प्रयोग किया है। इसीलिए इस सिद्धान्त को 'मैं' और 'मुझे' का सिद्धान्त भी कहते हैं। 'मैं' का अर्थ व्यक्ति द्वारा दूसरों के प्रति किये जाने वाले व्यवहार से है तथा 'मुझे' का अर्थ है व्यक्ति द्वारा किए गये व्यवहार पर दूसरों की प्रतिक्रया, जिसे व्यक्ति अन्तरीकृत करता है। 'मैं' और 'मुझे' में अन्तःक्रिया के कारण ही 'स्व' का विकास होता है। स्वचेतना का विकास होने पर बालक, अनुकरण, संकेत, तथा भाषा के माध्यम से सीखना प्रारम्भ करता है और समाज के विचारों, मूल्यों, अभिवृत्तियों आदि को ग्रहण करने लगता है। यही समाजीकरण होता है।

उपर्युक्त तीनों सिद्धान्तों के विवेचन से स्पष्ट है कि समाजीकरण, समाज में ही रहकर हो सकता है और यह सामाजिक अन्तःक्रिया का परिणाम है।

4. फ्रायड़ का सिद्धान्त (Theory of Freud) : प्रसिद्ध मनोविज्ञानी फ्रायड ने समाजीकरण के अपने सिद्धान्त को मानसिक क्रियाओं के आधार पर समझाया है। वे यह मानते हैं कि मानव का समस्त व्यवहार लिबिडो अर्थात् काम-प्रवृत्तियों से तय होता है। फ्रायड़ ने इसे 'इड' (Id) अहम् (Ego) और पराअहम् (Super Ego) इन तीन भागों में बांटा। इड (Id) अहम् की मूल प्रवृत्तियों, प्रेरणाओं, असमाजीकृत इच्छाओं एवं स्वार्थों का योग है। 'इड' के सामने नैतिक-अनैतिक, अच्छे बुरे का कोई प्रश्न नहीं होता है। यह पाशविक प्रवृति के निकट है जो किसी न किसी प्रकार संतुष्टि चाहता है। 'अहम्' स्व का चेतन एवं तार्किक पक्ष है जो व्यक्ति को सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल व्यवहार करने का निर्देश देता है और 'इड' पर नियंत्रण रखता है। अहम् भी 'इड' के समान नैतिक-अनैतिक, प्रेम व घृणा को अधिक महत्व तो नहीं देता फिर भी यह अधिक व्यवहारिक है, क्योंकि यह 'इड' को परिस्थतियों के अनुकूल होने पर ही अपनी इच्छा की पूर्ति की स्वीकृति देता है। 'पराअहम्' (Super Ego) सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों का संयोग है जिसे व्यक्ति ने आत्मसात् कर रखा है और जो उसकी अन्तरात्मा का निर्माण करते हैं। इस प्रकार 'इड' और 'अहम्' सामाजिक परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं, जबकि 'पराअहम्' विवेक और सामाजिक मूल्यों को प्रकट करता है। यह व्यक्ति के समाजीकरण का प्रमुख आधार है। व्यक्ति 'इड' और 'अहम्' की बात को ठुकराकर जितना 'पराअहम्' के अनुसार आचरण करता है, उतना ही उसका समाजीकरण सफल माना जाता है।

सहायक आचार्य
शिक्षा विभाग,
जैन विश्व भारती संस्थान
लाडनूँ -341306 (राजस्थान)